National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.nationaljournals.com
ISSN: 2455-9040
Received: 18-04-2021, Accepted: 12-05-2021, Published: 24-05-2021
Volume 6, Issue 2, 2021, Page No. 28-31

परिवहन एवं संचार का ग्रामीण विकास पर प्रभाव: बलरामपुर जनपद (उ.प्र.) के तुलसीपुर विकासखंड का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

देव नारायण पांडेय[1], डॉ मीनू मिश्रा[2]
[1] शोध छात्र, समाज शास्त्र विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] एसोसिएट प्रोफेसर, गवर्नमेंट एम.के.बी. आर्ट्स और कॉमर्स कॉलेज, जबलपुर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
परिवहन को आर्थिक विकास की रीढ़ की हड्डी कहा जाता है। कृषि कार्य हेतु उन्नतशील बीज, उर्वरक, कीटनाशक रसायन आदि प्रमुख आवश्यक तत्व हैं जो परिवहन साधनों के विकास से ही समय पर उपलब्ध कराए जा सकते हैं। कृषि उत्पाद और डेयरी उद्योग के व्यापार एवं विपणन के लिए परिवहन के उत्तम साधनों का विकास होना अति आवश्यक है। संचार के साधनों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना के आदान-प्रदान, शिक्षा तथा विभिन्न कार्यक्रमों की की जानकारी में वृद्धि हुई है परिणाम स्वरूप गांव के सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है। ग्रामीण विकास के सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु कृषकों को जागरूक करना, विभिन्न सुविधाओं से परिचित कराना तथा उन्हें विकास की प्रक्रिया में सहभागी बनाने के लिए प्रभावी संचार व्यवस्था का होना अति आवश्यक है। संचार साधनों में डाकघर, रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल, इंटरनेट, दूरभाष, किसान मेला प्रदर्शनी आदि प्रभावी माध्यम है।

मूल शब्द: प्रभवी संचार, डेयरी उद्योग, विपणन, कृषि उत्पाद

प्रस्तावना
किसी भी क्षेत्र विशेष के विकास में परिवहन एवं संचार साधनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवहन को आर्थिक विकास की रीढ़ की हड्डी कहा जाता है। यदि ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करना है तो परिवहन प्राथमिक आवश्यकता है, क्योंकि परिवहन की सुविधा होने पर व्यवसायिक कृषि का विकास किया जा सकता है तथा किसी वस्तुओं को आसानी से बाजार पहुंचाया जा सकता है। कृषि कार्य हेतु उन्नतशील बीज, उर्वरक, कीटनाशक रसायन आदि प्रमुख आवश्यक तत्व हैं जो परिवहन साधनों के विकास से ही समय पर उपलब्ध कराए जा सकते हैं। कृषि उत्पाद और डेयरी उद्योग के व्यापार एवं विपणन के लिए परिवहन के उत्तम साधनों का विकास होना अति आवश्यक है।

वहीं दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों के सामाजिक आर्थिक व शैक्षणिक विकास के लिए संचार साधनों का होना बहुत जरूरी है। वर्तमान समय में संचार के साधनों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना के आदान-प्रदान, शिक्षा तथा विभिन्न कार्यक्रमों की की जानकारी में वृद्धि हुई है परिणाम स्वरूप गांव के सामाजिक, सांस्कृतिक व आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है। ग्रामीण विकास के सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु कृषकों को जागरूक करना, विभिन्न सुविधाओं से परिचित कराना तथा उन्हें विकास की प्रक्रिया में सहभागी बनाने के लिए प्रभावी संचार व्यवस्था का होना अति आवश्यक है। संचार साधनों में डाकघर, रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल, इंटरनेट, दूरभाष, किसान मेला प्रदर्शनी आदि प्रभावी माध्यम है।

अध्ययन के उद्देश्य: शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:-

1. अध्ययन क्षेत्र के परिवहन सुविधाओं का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र के संचार सुविधाओं का अध्ययन करना।
3. परिवहन तथा संचार साधनों का ग्रामीण विकास से संबंध का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र: विकासखंड तुलसीपुर, उत्तर प्रदेश राज्य के बलरामपुर जनपद का एक विकासखंड है। जो नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्र से लगा हुआ है। इस विकास खंड का प्रमुख व्यवसाय कृषि है।

किसी भी क्षेत्र के आर्थिक, सामाजिक-सांस्कृतिक प्रगति के लिए परिवहन को अति महत्वपूर्ण अवस्थापनात्मक

तत्व माना जाता है। परिवहन को आर्थिक विकास की रीढ़ की हड्डी कहा जाता है। यदि ग्रामीण क्षेत्रों का विकास करना है तो परिवहन प्राथमिक आवश्यकता है, क्योंकि परिवहन की सुविधा होने पर व्यवसायिक कृषि का विकास किया जाता है तथा कृषि वस्तुओं को आसानी से बाजार में पहुंचाया जा सकता है। यदि सर्वविदित है कि जिन क्षेत्रों में परिवहन के साधनों का विकास अधिक हुआ है वह क्षेत्र वर्तमान समय में विकसित अवस्था में है। जिन क्षेत्रों में परिवहन के साधनों का विकास तुलनात्मक रूप से कम हुआ है वह क्षेत्र पिछड़े या अल्प विकसित अवस्था में है।

कृषि कार्य हेतु उन्नतशील बीज, उर्वरक, कीटनाशक दवाएं आदि प्रमुख तत्व है जो परिवहन साधनों के विकास से ही समय पर उपलब्ध कराए जा सकते हैं। कृषि उत्पाद और डेयरी उद्योग के व्यापार एवं विपणन के लिए परिवहन के उत्तम साधनों का विकास होना बहुत जरूरी है।

अध्ययन क्षेत्र में परिवहन सुविधा का स्वरूप

अध्ययन क्षेत्र समतल व मैदानी होने के कारण यहां के यातायात का मुख्य स्वरुप सड़क मार्ग व रेल मार्ग है । तुलसीपुर विकासखंड के उत्तर का क्षेत्र नेपाल सीमा से सटा हुआ है जो ज्यादातर जंगलों से आच्छादित है। इसलिए इस क्षेत्र में यातायात सुविधाओं का विकास अच्छी तरह से नहीं हो पाया है। अध्ययन क्षेत्र के परिवहन सुविधा के अंतर्गत परिवहन मार्गों का वितरण, घनत्व एवं प्रति लाख जनसंख्या पर सड़कों की उपलब्धता का वर्णन किया गया है।

सड़क मार्ग

अध्ययन क्षेत्र में नागरिकों के परिवहन का प्रमुख साधन सड़क है। सड़क मार्ग से अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक गांव तथा पुरवा तक आसानी से पहुंचा जा सकता है। बलरामपुर जनपद के कुल सड़कों की लंबाई 2406 किलोमीटर है। जिसमें 2164 किलोमीटर लंबाई लोक निर्माण विभाग द्वारा निर्मित है (सेन्सस ऑफ़ इण्डिया 2011)। अध्ययन क्षेत्र में प्रति हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र पर पक्की सड़कों की कुल लंबाई वर्ष 2014-15 में 553.25 किलोमीटर वहीं वर्ष 2015-16 में यह लंबाई बढ़ कर 580.80 किलोमीटर हो गई(सेन्सस ऑफ़ इण्डिया 2011)। इसके अतिरिक्त प्रति लाख जनसंख्या पर पक्की सड़कों की कुल लंबाई वर्ष 2015-16 में 98.33 किलोमीटर किंतु वर्ष 2015-16 में यह लंबाई बढ़ कर 103.23 किलोमीटर हो गई (सेन्सस ऑफ़ इण्डिया 2011)।

इस प्रकार से स्पष्ट होता है कि वर्ष 2014-15 से 2015-16 के बीच पक्की सड़कों की लंबाई में आशानुरूप वृद्धि हुई है। इसी के साथ अध्ययन क्षेत्र के तीनों गांव देवीपाटन बड़गों एवं ठकुरापुर पूर्ण रूप से सड़क मार्ग से सुसज्जित है।

रेलमार्ग

अध्ययन क्षेत्र में सड़क परिवहन के बाद रेल परिवहन का द्वितीय स्थान है वर्तमान समय में बलरामपुर जनपद में रेलवे लाइन की कुल लंबाई 72 किलोमीटर है तथा स्टेशनों की संख्या हाल्ट सहित 11 है, इसमें से कौवापुर, लक्ष्मणपुर तथा तुलसीपुर स्टेशन तुलसीपुर विकासखंड में स्थित है। अध्ययन क्षेत्र का ठाकुरापुर गांव लक्ष्मणपुर हाल्ट से 500 मीटर की दूरी, देवी पाटन गांव तुलसीपुर रेलवे स्टेशन से 1.5 किलोमीटर तथा बड़गों तुलसीपुर रेलवे स्टेशन से 5 किलोमीटर दूरी पर स्थित है(सेन्सस ऑफ़ इण्डिया 2011)। इस प्रकार से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में रेलवे परिवहन की सुविधा की दृष्टिकोण से विकसित है।

संचार

संचार का सामान्य अर्थ है कि किसी सूचना या संदेश को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुंचाना या संप्रेषित करना है। स्वतंत्रता के पूर्व संचार साधनों के अभाव के कारण ग्रामीण क्षेत्रों का सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक विकास नहीं हो सका। वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी व डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की उपलब्धियों ने संपूर्ण विश्व को एक ग्लोबल विलेज के रूप में परिवर्तित कर दिया है। संचार के साधनों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना के आदान-प्रदान, शिक्षा तथा विविध कार्यक्रमों के जानकारी में वृद्धि हुई है। जिसके कारण गांव का सामाजिक सांस्कृतिक व आर्थिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

ग्रामीण क्षेत्र के अन्य अवस्थापनात्मक सुविधाओं जैसे परिवहन सुविधा, बीमा, वित्त, सेवा केंद्रों की स्थापना, कृषि से संबंधित योजनाओं का प्रसार विकसित संचार व्यवस्था के अभाव में यह सभी कारक प्रभावशाली नहीं हो सकते। ग्रामीण विकास के सभी कार्यक्रमों को सफल बनाने हेतु कृषकों को जागरूक करना, विभिन्न सुविधाओं से परिचित करना तथा उन्हें विकास की प्रक्रिया में सहभागी बनाने के लिए प्रभावी संचार व्यवस्था का होना अति आवश्यक है। इसी दृष्टिकोण से कृषिकों को कृषि से संबंधित नई-नई जानकारी उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार द्वारा वर्ष 2004 में 'किसान काल सेंटर' तथा किसान चैनल का उद्घाटन किया गया। किसान काल सेंटर में 1551 नंबर डायल करके कृषि विषय विशेषज्ञ से कृषि से संबंधित किसी भी समस्या का समाधान नि:शुल्क प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार

से किसान काल सेंटर एवं किसान चैनल कृषिकों को आधुनिक कृषि प्रौद्योगिकी से संबंधित नवीन जानकारी उपलब्ध कराने में सहायक सिद्ध होंगे। संचार साधनों में डाकघर, रेडियो, टेलीविजन, मोबाइल, इंटरनेट दूरभाष, किसान मेला, प्रदर्शनी आदि प्रभावी माध्यम है।

केंद्र सरकार द्वारा शुरू किए गए 'डिजिटल इंडिया कार्यक्रम' के अंतर्गत प्रत्येक गांव को इंटरनेट के माध्यम से जोड़ा जा रहा है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य देश के प्रत्येक वर्ग को सूचना तकनीकी लाभ मिले और इसका इस्तेमाल कृषि कार्य के लिए सही ढंग से किया जा सके। कृषिकों को मिट्टी, भूमिगत जल, मौसम आदि की जानकारी उपलब्ध कराया जाता है। उन्नतशील खेती के तरीके, फसल उत्पादकता बढ़ाने के उपाय एवं अपने जीवन स्तर को सुधारने के लिए कृषकों के लिए किसान काल सेंटर की स्थापना की गई है। कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा संचालित किसान चौपाल के माध्यम से खेती के तरीके पशुपालन एवं इससे संबंधित समस्याओं को सुना जाता है एवं इसका निराकरण भी किया जाता है। संचार एवं संप्रेषण का एक अन्य माध्यम ग्रामीण ज्ञान केंद्र है जो कृषि से संबंधित नई जानकारी उपलब्ध कराकर कृषिकों तक पहुंचाती है। ग्रामीण ज्ञान केंद्र के माध्यम से कृषि, बागवानी, डेरी, जागरूकता कार्यक्रम, कंप्यूटर शिक्षा और आजीविका सहायता के लिए व्यवसाय प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रकार वर्तमान समय में कृषक कृषि एवं उससे संबंधित नवीन जानकारी संचार साधनों के माध्यम से प्राप्त कर अधिक उत्पादकता के साथ-साथ अधिक लाभ प्राप्त कर रहा है। संचार साधनों में डाकघर टेलीफोन, दूरसंचार, टेलीविजन, ई-मेल आदि मुख्य माध्यम है। वही दूसरी ओर प्रदर्शनी और नाटक आदि सरल एवं प्रभावी माध्यम है।

अध्ययन क्षेत्र में संचार के साधन

डाक घर

ग्रामीण क्षेत्रों में डाकघर संचार के साधनों की उपयोगिता वर्तमान समय में भी अपना स्थान बनाए हुए है। तुलसीपुर उप डाकघर से 19 डाकघर की शाखाएं जुड़ी हुई है। अध्ययन क्षेत्र के गांव ठाकुरापुर एवं देवीपाटन तथा बड़गांव गांव की संचार सेवा तुलसीपुर उप डाकघर से संचालित होती है।

टेलीफोन

बलरामपुर जनपद में वर्ष 2011 में प्रत्येक परिवार के पास कुल 5212 टेलीफोन कनेक्शन तथा 18 5379 मोबाइल टेलीफोन था। वही तुलसीपुर तहसील में यह संख्या क्रमशः 1609 तथा 61495 था (सेन्सस ऑफ़ इण्डिया 2011)। लैंडलाइन टेलीफोन तथा मोबाइल टेलीफोन दोनों का उपयोग करने वाले परिवारों की कुल संख्या बलरामपुर जनपद में 4159 थी। तथा तुलसीपुर विकासखंड में यह संख्या कुल 1071 थी (सेन्सस ऑफ़ इण्डिया 2011)।

तालिका 1: लैंडलाइन एवं मोबाइल टेलीफोन का उपयोग करने वाले घरेलू परिवारों की संख्या (वर्ष 2011)

	लैंडलाइन टेलीफोन	मोबाइल टेलीफोन	दोनों (लैंडलाइन + मोबाइल)
बलरामपुर जनपद			
ग्रामीण	4557(1.54%)	169711(57.9%)	3383(1.14%)
नगरीय	655(2.64%)	15668(63.12%)	776(3.13%)
कुल	5212(1.62%)	185379(57.75%)	4159(1.3%)
तुलसीपुर			
ग्रामीण	1458(1.38%)	57658(54.42%)	985(0.93%)
नगरीय	151(2.15%)	3837(54.73%)	86(1.23%)
कुल	1609(1.42%)	61495(54.44%)	1071(0.95%)

स्रोत: सेन्सस ऑफ़ इण्डिया (2011), जिला सेन्सस हैण्ड बुक बलरामपुर

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि बलरामपुर जनपद में लैंडलाइन टेलीफोन मोबाइल टेलीफोन तथा दोनों का उपयोग करने वाले कुछ घरेलू परिवारों की संख्या तथा प्रतिशतता दोनों की अपेक्षा तुलसीपुर तहसील में यह संख्या तथा प्रतिशतता दोनों में कमी है इसके साथ ही नगरीय क्षेत्रों में यह सुविधा ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक है।

संचार के अन्य साधन

चार के अन्य साधनों के अंतर्गत रेडियो, टेलीविजन, चलचित्र, इंटरनेट, प्रदर्शनी, समाचार-पत्र एवं पत्रिकाएं आदि शामिल है। अध्ययन क्षेत्र के लगभग सभी परिवारों के पास रेडियो या टेलीविजन है जबकि समाचार पत्र की पहुंच संपन्न एवं शिक्षित परिवारों नगरीय क्षेत्रों से सटे हुए गांव, ग्रामीण बाजारों तक ही सीमित है। इसके अतिरिक्त कृषि विभाग द्वारा कृषि प्रदर्शनी, किसान मेला के माध्यम

से कृषि की नई-नई प्रौद्योगिकी का समय-समय पर कृषिकों के लिए प्रचार प्रसार किया जाता है, लेकिन वर्तमान समय में विकास को तीव्र गति प्रदान करने के लिए संचार सुविधाएं अपर्याप्त है, इसलिए संचार सुविधाओं में पर्याप्त वृद्धि की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि परिवहन का मुख्य साधन है तुलसीपुर विकासखंड के अधिकांश गांव में पक्की सड़कों काजाल बिछा हुआ है लेकिन आज भी नेपाल के सीमावर्ती गांव जो कि जंगलों से घिरा हुआ है वहां तक की सड़कों की स्थिति अच्छी नहीं है। वर्षा ऋतु में सड़कों की स्थिति बहुत ही दयनीय हो जाती है इसके अतिरिक्त यातायात के साधनों की स्थिति भी बहुत अच्छी नहीं है। रूप में डाकघर मोबाइल इंटरनेट रेडियो टेलीविजन आदि प्रमुख है। सभी क्षेत्रों में डाकघरों की पहुंच नहीं है इसके अतिरिक्त नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्रों में मोबाइल इंटरनेट के लिए नेटवर्क की समस्या आम है इस प्रकार से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में परिवहन एवं संचार सुविधाओं की स्थिति अच्छी नहीं है इसलिए तुलसीपुर विकासखंड के ग्रामीण क्षेत्रों का विकास उतना नहीं हो पाया है जितना कि होना चाहिए। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को विकास की मुख्यधारा में शामिल करने के लिए परिवहन एवं संचार के साधनों पर विशेष ध्यान देना होगा।

सन्दर्भ सूची

1. सेन्सस ऑफ़ इण्डिया (2011), जिला सेन्सस हैण्ड बुक बलरामपुर
2. ओपन नौकरी (2019) भारत की कृषि का इतिहास https://www.opennaukri.com/history-of-agriculture-in-india/
3. कृषि जागरण (2018)कृषि विकास, नई तकनीक से ही सभव!, https://hindi.krishijagran.com/news/agricultural-development-only-new-technology/
4. वासुदेव मीणा(2017) सिंचाई प्रणालियों की आवश्यकता और उनके प्रकार, कुरुक्षेत्र, नवम्बर 2017
5. देवाशीष उपाध्याय, (2018), कृषिगत आधारभूत अवसंरचना, कुरुक्षेत्र, अगस्त, 2018
6. डॉ. केके त्रिपाठी(2019), कृषि क्षेत्र में बुनियादी ढाँचागत सुधारडॉ. केके त्रिपाठी, कुरुक्षेत्र, अक्टूबर 2019
7. कृषि जागरण (2018),कृषि में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकियों की भूमिका, https://hindi.krishijagran.com/editorial/role-of-information-and-communication-technologies-in-agriculture/
8. किरण (2017), आर्थिक विकास में परिवहन की भूमिका https://kirankumarimth.blogspot.com/2017/11/blog-post.html
9. डा. हरेकृष्ण सिंह, डा. सतीश कुमार शर्मा(1993), ग्रामीण विकास में ग्रामोद्योग, योजना, 15 अक्टूबर, 1993